९. कृषि

आकृति ९.१ : ग्रामीण क्षेत्र का एक घर

आकृति ९.१ देखो, निम्न प्रश्नों के आधार पर कक्षा में चर्चा करो।

- चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है; यह बताओ।
- बकरियाँ एवं मुर्गियाँ क्यों पाली जाती होंगी?
- चित्र में कौन-कौन-से औजार दिखाई दे रहे हैं?
- इन औजारों का उपयोग किसलिए करते होंगे?
- चित्र में दिखाई गई कृतियाँ किस व्यवसाय प्रकार के अंतर्गत आती हैं ?
- इन लोगों का मुख्य व्यवसाय कौन-सा होगा?
- चित्र में दिखाया यह घर किसका होगा?
- दैनिक जीवन में उपरोक्त में से तुम किन उत्पादनों का उपयोग करते हो?

भौगोलिक स्पष्टीकरण

ऊपर दिए गए चित्र में खेत की फसलें तथा घर के पास में हल की फाल दिखाई देती है। इससे पता चलता है कि यह किसान का घर है। किसान बकरियाँ, गायें, भैंसें, मुर्गियाँ पालता है। ये बातें भी चित्र में दिखाई दे रही हैं। इनसे उसे दूध, अंडे आदि उत्पादन प्राप्त होते हैं। मुर्गियाँ एवं बकरियों को बेचकर उसे पैसा मिलता है। ये सभी कार्य वह जीवनयापन के लिए करता है। ये सभी कार्य कृषि के अंतर्गत किए जाते हैं। ये कृषि के पूरक व्यवसाय होते हैं।

कृषि व्यवसाय विस्तृत क्षेत्र है; अनाज, वस्त्र जैसी आवश्यकताओं के लिए वनस्पतियों एवं प्राणियों का उपयोग होता है। फसलों के उत्पादन के साथ ही मवेशी, बकरियाँ, भेड़ें, मुर्गी पालन भी किया जाता है। साथ ही रेशम के कीड़े पालना, मधुमक्खी का पालन, फूल बाग, फल बगीचे, मत्स्य पालन, (कृषि) वराह पालन, एमू पालन आदि व्यवसायों का भी समावेश कृषि व्यवसाय में किया जाता है।

कृषि व्यवसाय में मानव संसाधन, प्राणी, औजार जैसे विविध साधन उपयोग में लाए जाते हैं। आधुनिक तकनीकी ज्ञान का उपयोग भी किया जाता है। कृषि व्यवसाय में कृषि सबसे प्रमुख एवं महत्वपूर्ण व्यवसाय माना जाता है।

देखो तो...भला क्या होता है ?

आकृति ९.२ : पारंपरिक से आधुनिक कृषि से संबंधित कृतियाँ

- चित्रों का निरीक्षण करो। चित्रों में कौन-से परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं; इसकी चर्चा करो।
- पारंपरिक कृषि पद्धति और आधुनिक कृषि पद्धति में क्या अंतर है?

भौगोलिक स्पष्टीकरण

उपरोक्त चित्रों का अध्ययन करने पर कृषि में आए हुए परिवर्तन हमारे ध्यान में आते हैं। प्राचीन काल में आदिमानव जंगलों में भटकता था। वहाँ प्राप्त होने वाले उत्पादनों पर वह अपना जीवन निर्वाह करता था। उसके पश्चात उसे कृषि की कल्पना सूझने पर उसने भूमि से अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करना शुरू किया। प्राप्त अनाज में से वह पूरे वर्ष के लिए खाद्यान्न का प्रावधान करने लगा। कृषि फसलों के साथ-साथ पशु पालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, फूलों की खेती, फलों की खेती द्‌वारा मानव उत्पादन लेने लगा। प्राचीनकाल के घुमंतू जीवन को छोड़कर वह एक ही स्थान पर स्थायी निवास कर कृषि से संबंधित विभिन्न व्यवसाय करने लगा।

उपरोक्त चित्रों में हमने कृषि क्षेत्र में हुए विविध परिवर्तन देखे। अब हम यहाँ कृषि व्यवसाय के अंतर्गत आने वाले विविध व्यवसायों की जानकारी प्राप्त करेंगे। इन व्यवसायों के विविध उत्पादनों का हम प्रतिदिन के जीवन में उपयोग करते हैं। इन व्यवसायों में से पारंपरिक व्यवसाय कृषि के पूरक व्यवसाय के रूप में जाने जाते हैं।

पशु पालन : अलग-अलग पशुओं को पालकर उनसे विविध उत्पादन प्राप्त करना, उनका विविध कार्यों के लिए उपयोग करना, अपना जीवन निर्वाह करना, यह पशु पालन का मुख्य उद्‌देश्य है।

मवेशी पालन : गाय, बैल, भैंस, भैंसा आदि पशु कृषि कार्य के लिए पाले जाते हैं। कृषि कार्य में उपयोग में आने वाले व दुधारू पशुओं का पालन भी एक व्यवसाय है। यह भी मिश्रित कृषि का एक अविभाज्य भाग है। जिसका स्वरूप आधुनिक व्यवसाय के रूप में हो गया है। भारत में इस व्यवसाय का स्वरूप आजकल बदल गया है। व्यापारिक सिद्‌धांत पर पशुपालन व्यवसाय मुख्य रूप से दूध व मांस उत्पादन के लिए ही किया जाता है।

बकरियाँ एवं भेड़ पालन : यह भी पारंपरिक व्यवसाय है। बकरी एवं भेड़ पालन पहाड़ी क्षेत्रों तथा अद्‌र्ध उजाड़ शुष्क जलवायु के प्रदेशों में किया जाने वाला व्यवसाय

है। नगरीय बस्तियों से दूर, ग्रामीण एवं पहाड़ी क्षेत्रों के परिसर में छोटी घास, झाड़-झंखाड़, बेर-बबूल पर बकरियाँ एवं भेड़ें पाली जाती हैं। भारत में मांस को प्रमुख उद्‌देश्य मानकर यह व्यवसाय किया जाता है। ऊन उत्पादन के लिए भी भेड़ों का पालन किया जाता है।

मुर्गी पालन : संसार में सर्वत्र सभी प्रकार की कृषि में मुर्गी पालन तथा तत्सम वर्ग के पक्षियों का पालन कम अधिक मात्रा में किया जाता है। खेतों में अथवा मकान के पिछवाड़े मुर्गियों का पालन करना एक पारंपरिक व्यवसाय है। यह व्यवसाय घरेलू तथा व्यापारिक सिद्‌धांत पर किया जाता है। व्यापारिक सिद्‌धांत पर यह व्यवसाय करते समय विशेष सावधानी रखनी पड़ती है। इसके लिए वैज्ञानिक पद्‌धति अपनाई जाती है। भारत में यह व्यवसाय बड़े शहरों के समीप बड़े पैमाने पर चलता है क्योंकि इस व्यवसाय के लिए शहरों के तैयार बाजार उपलब्ध रहते हैं।

कुछ क्षेत्रों में खरगोश पालन, एमू पालन और वराह पालन व्यवसाय भी किए जाते हैं।

मधुमक्खी पालन :

मधुमक्खी पालन में शहद एवं मोम जैसे उत्पादन प्राप्त होते हैं। अतः यह व्यवसाय किया जाता है। मधुमक्खियाँ शहद प्राप्त करने के लिए मंजिरीयुक्त पेड़ों पर मँड़राती हैं। फलतः पुष्पों का परागीभवन उत्तम ढंग से होता है और पेड़ों की फलधारण क्षमता में वृद्‌धि होती है। परिणामतः उत्पादन में वृद्‌धि होती है । मधुमक्खी पालन व्यवसाय कृषि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण व्यवसाय है।

मत्स्य पालन :

मत्स्य पालन हेतु खेत तालाब तैयार किया जाता है। उसमें पानी एकत्र किया जाता है। इस तालाब में मत्स्य बीज डाले जाते हैं। इसके लिए मीठे पानी में बढ़ने वाली मछलियों की प्रजातियों का उपयोग किया जाता है। मछलियों के उत्पादन में वृद्‌धि के लिए वैज्ञानिक पद्‌धति का उपयोग किया जाता है ।

खुले सागर में मत्स्य पकड़ने के कार्य में अनेक खतरे होते हैं। जाल में अनेक प्रकार की मछलियाँ आती हैं। इनका वर्गीकरण करने का कार्य बढ़ जाता है। सभी मछलियों को समान मूल्य नहीं मिलता इसलिए विशिष्ट प्रकार की मछलियों का स्वतंत्र उत्पादन करना शुरू हुआ है। इसी में से मत्स्य कृषि का विकास हुआ । वाम, रोहू, रावस (सैलमन), कोलंबी (झींगा) आदि का उत्पादन मत्स्य कृषि में लिया जाता है।

रेशम की खेती :

रेशम का धागा अर्थात एक विशिष्ट प्रकार के कीड़े के कोष का धागा होता है। ये धागे अत्यंत सूक्ष्म और चीमड़ होते हैं। इनसे मुलायम वस्त्र बनाए जाते हैं। कोषों से धागों का निर्माण एवं धागों से वस्त्र का निर्माण ये दोनों स्वतंत्र व्यवसाय हैं। इनका समावेश कृषि वर्ग में होता नहीं है। किसानों को रेशम के कीड़ों के बीज विविध संस्थानों द्‌वारा दिए जाते हैं। रेशम के कीड़ों का मुख्य खाद्‌य शहतूत के पत्ते हैं। शहतूत का वृक्ष कम-से-कम पंद्रह वर्षों तक जीवित रहता है। जिसके कारण प्रतिवर्ष लागत में बचत होती है।

नर्सरी (पौधा घर) व्यवसाय :

विगत कुछ वर्षों में फूल उत्पादन, औषधि एवं सुगंधित वनस्पति और अन्य वृक्ष खेती जैसे खेती से संबंधित परंतु विभिन्न स्वरूप के उत्पादन क्षेत्रों में वृद्‌धि हो रही है। ऐसे उत्पादनों के लिए उत्तम और गुणवत्तापूर्ण पौधों, कलमों, कंदमूलों और बीजों की आवश्यकता होती है। इसी में से नर्सरी व्यवसाय का उद्‌गम हुआ है। इस व्यवसाय द्‌वारा आर्थिक लाभ भी अधिक होता है।

आकृति ९.३ : पौधा वाटिका (पौधा घर)

क्या तुम जानते हो ?

✲ हरितगृह कृषि :

कम क्षेत्र में अधिक-से-अधिक उत्पादन प्राप्त करना और भूमि, जलवायु, उष्णता, आर्द्रता, नमी जैसे प्राकृतिक घटकों पर पूर्ण नियंत्रण रखते हुए अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त करा देने वाली नगदी फसलों का उत्पादन लेने के लिए हरितगृहों का उपयोग किया जाता है। हरितगृह कृषि यह वर्तमान काल की अत्यधिक विशेष प्रकार की कृषि पद्‌धति है। हरितगृह बनाने के लिए लोहे के पाइप का ढाँचा और प्लास्टिक की चादर (कागज) का उपयोग किया जाता है। पानी, प्रकाश, और तापमान का नियंत्रण तथा अनुकूल वातावरण

द्‌वारा फसलों को रोगों से बचाना इसका प्रमुख उद्‌देश्य है। लिली, जरबेरा जैसे अत्यधिक आर्थिक लाभ देने वाले फूलों की खेती में व्यापारिक सिद्‌धांत पर हरितगृहों का उपयोग बड़े पैमाने पर किया जाता है।

आकृति ९.४ : हरितगृह कृषि

कृषि के प्रकार :

किसी प्रदेश की भौगोलिक विविधता एवं सांस्कृतिक भिन्नता, तकनीकी विविधता के आधार पर कृषि की विविध पद्‌धतियों का उदय हुआ है। कृषि का उद्‌देश्य, ली जाने वाली फसलें, कृषि करने की पद्‌धति, उपयोग में लाये जाने वाले यंत्र, भूमि का उपयोग आदि पर कृषि का प्रकार निर्भर करता है। सामान्य रूप से कृषि के निम्न प्रकार किए जाते हैं।

कृषि के प्रकार
- निर्वाह कृषि
  - स्थलांतरित कृषि
  - गहन कृषि
- व्यापारिक शेती
  - विस्तृत कृषि
  - बागानी कृषि
  - मंडी बागानी कृषि
  - फलोद्‌यान कृषि

निर्वाह कृषि :

पारंपरिक कृषि के दो प्रकार गहन कृषि और स्थलांतरित कृषि होते हैं। गहन कृषि एक ही भूमि पर अनेक वर्षों तक की जाती है। स्थलांतरित कृषि में हर बार नई भूमि पर खेती की जाती है अथवा निश्चित कालावधि के बाद उसी भूमि पर फिर से कृषि की जाती है।

गहन कृषि :

कम-से-कम क्षेत्र में अधिक-से-अधिक उत्पादन प्राप्त करने की पद्‌धति को गहन कृषि कहा जाता है।

- ❖ अधिक जनसंख्या अथवा वास्तव में भूमि क्षेत्र ही कम होने पर प्रति व्यक्ति कृषि भूमि का परिमाण कम होता है।
- ❖ यह कृषि प्रमुख रूप से विकसनशील प्रदेशों में पाई जाती है।
- ❖ इस कृषि से मिलने वाले अनाज से केवल परिवार की आवश्यकता ही पूर्ण की जा सकती है।
- ❖ इस कृषि प्रकार में किसान और उसका परिवार पूर्णतः कृषि पर ही अवलंबित रहता है। कृषि की उपज कम होने के कारण आर्थिक स्थिति ठीक-ठाक ही होती है।

आकृति ९.५ सीढ़ियोंवाली गहन कृषि

- ❖ इस कृषि में केवल प्राणिज ऊर्जा का ही उपयोग अधिक होता है।
- ❖ इस कृषि में खाद्‌यान्न के अलावा सब्जियाँ भी उगाई जाती हैं।

स्थलांतरित कृषि :

घुमंतू कृषि प्राथमिक अवस्था की कृषि है। यह खेती उष्ण कटिबंधीय घने वनों तथा पर्वतीय क्षेत्रों में की जाती है। कृषि करने के लिए किसान सर्वप्रथम किसी वन भूमि के टुकड़े का चुनाव करता है। उस भूमि को कृषि

योग्य बनाने के लिए वह झाड़- झंखाड़, घास की कटाई करता है। भूमि खाली और स्वच्छ करता है। कटे वृक्षों के सूखने पर उन्हें जलाता है। उसकी राख खेतों में ही खाद के रूप में मृदा में घुल-मिल जाती है। वर्षा के पूर्व बोआई करके उपज प्राप्त करता है। (देखो आकृति ९.६) इससे प्राप्त होने वाली उपज अन्न की आवश्यकता को पूर्ण करने की दृष्टि से पर्याप्त नहीं होती। इसलिए वह शिकार करना, मछली पकड़ना, वनों में फल तथा कंदमूल इकट्ठे करना आदि कार्य भी करता है। खेती के इस प्रकार में भूमि में फसल लेने की अवधि अल्प होती है तथा भूमि का ऊसर रहने का समय दीर्घ होता है। भूमि की उर्वरता कम होने पर दो-तीन वर्षों के बाद खेती के लिए दूसरी जगह चुनी जाती है।

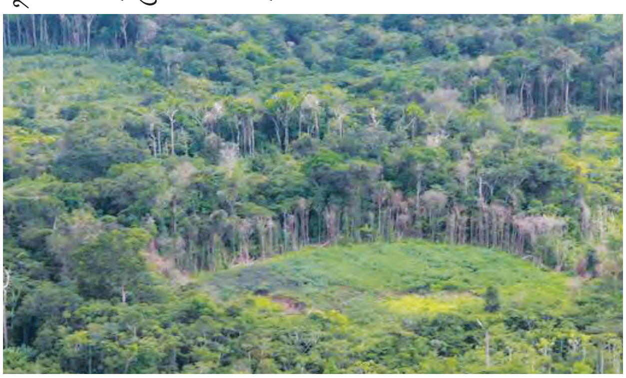

आकृति ९.६: घुमंतू अथवा स्थलांतरित कृषि

व्यापारिक कृषि :

व्यापारिक कृषि के मुख्य दो प्रकार हैं-विस्तृत खाद्यान्न कृषि और बागानी कृषि। इस प्रकार की खेती में उपज मुख्य रूप से व्यापारिक सिद्धांत पर प्राप्त की जाती है।

विस्तृत कृषि :

- खेती का क्षेत्रफल २०० हेक्टर अथवा उससे अधिक होता है।
- खेती का क्षेत्र विस्तृत एवं जनसंख्या विरल होने के कारण यह खेती यंत्रों की सहायता से की जाती है। जैसे- जोताई के लिए ट्रैक्टर, कटाई के लिए दवनी यंत्र, कीटनाशकों के छिड़काव के लिए हेलीकाप्टर अथवा हवाई जहाज का उपयोग किया जाता है।
- एकल फसल पद्धति इस कृषि पद्धति की विशेषता है। जैसे- गेहूँ अथवा मकई की फसलें। इसके अलावा बार्ली, ओट्स, सोयाबीन की फसलें भी कुछ मात्रा में ली जाती हैं।
- इस कृषि के लिए बहुत बड़ी पूँजी लगानी पड़ती है। जैसे- खाद, कीटनाशकों एवं यंत्रों की खरीदारी, गोदाम, यातायात आदि के लिए बड़े पैमाने पर पूँजी लगती है।

आकृति ९.७: विस्तृत कृषि में यांत्रिकीकरण (आधुनिकीकरण)

- सूखा, कीटकों का आक्रमण जैसे टिड्डी दल का आक्रमण, इसी तरह बाजार भाव में होने वाला उतार-चढ़ाव जैसी समस्याएँ इस कृषि से जुड़ी होती हैं।
- समशीतोष्ण घास के प्रदेशों में इस प्रकार की कृषि की जाती है।

बागानी कृषि :

- इस कृषि का क्षेत्रफल ४० हेक्टर अथवा उससे अधिक होता है।
- कृषि का क्षेत्र पर्वतीय ढलान पर होने के कारण यंत्रों का उपयोग अधिकांशतः नहीं किया जा सकता। अतः इस कृषि में स्थानीय मानवश्रम का ही अधिक महत्त्व होता है।
- प्रदेश की भौगोलिक स्थिति जिस फसल के लिए पोषक होती है ; वही फसल बोई जाती है। यह एक फसल कृषि पद्धति हैं।
- इस कृषि में खाद्यान्न का उत्पादन नहीं होता। केवल व्यापारिक फसलों का ही उत्पादन किया जाता है। जैसे- चाय, रबड़, कॉफी, नारियल, कोको, मसाले के पदार्थ आदि।
- इस प्रकार की कृषि का प्रारंभ और विस्तार मुख्यत: उपनिवेशकाल (Colonial Period) में हुआ। अधिकांश बागानी कृषि उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में ही की जाती है।
- दीर्घकालिक फसलें, वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग; निर्यातक्षम उत्पादन, प्रक्रिया उद्योग आदि कारणों से इस कृषि के लिए भी बड़ी मात्रा में पूँजी की आवश्यकता होती है।
- बागानी कृषि के विषय में भी जलवायु और मानव संसाधन, पर्यावरण की अवनति, आर्थिक और प्रबंधकीय आदि समस्याएँ होती हैं।

❖ इस प्रकार की कृषि भारत के साथ - साथ अफ्रीका, दक्षिण व मध्य अमेरिका आदि प्रदेशों में की जाती है।

थोड़ा विचार करो

- ☞ व्यापारिक विस्तृत कृषि में अत्यधिक पूँजी क्यों लगती है?
- ☞ बागानी कृषि के लिए कुशल एवं अनुभवी मजदूरों की आवश्यकता क्यों होती है ?

मंडी बागानी कृषि :

मंडी बागानी कृषि यह कृषि की और एक आधुनिक पद्धति है। यह कृषि प्रकार नागरीकरण और उसके द्वारा निर्मित बाजार की वजह से उदित हुआ है। नगरीय लोगों की माँग के कारण निर्मित बाजार की माँग को देखकर वह माँग पूर्ण करने के लिए किसान शहर के पास ही सब्जियाँ व अन्य पदार्थों की उपज लेता है। अर्थशास्त्र के जैसी माँग; वैसी आपूर्ति इस नियम अनुसार बागानी कृषि नगरों की सब्जियों की माँग को पूर्ण करती है। इस कृषि का आकार छोटा होता है। इस कृषि में जलसिंचाई का उपयोग; जैविक व रासायनिक खादों का उपयोग, कम पूँजी, मानवश्रम का उपयोग, बाजार की माँग, विज्ञान व तकनीकी का उपयोग आदि घटकों का समावेश होता है। यह कृषि यातायात की सुविधाओं पर निर्भर होती है। शीघ्रगामी यातायात के साधनों पर इस कृषि का स्तर और मूल्य निर्धारित होते हैं । अतः इस कृषि को 'ट्रक कृषि'(Truck farming) कहते हैं।

आकृति ९.८ : मंडी बागानी कृषि

फलोद्यान कृषि/फूलों की कृषि :

फलोद्यान कृषि के एक उपप्रकार के रूप में फल व फूलों की कृषि की जाती है। यह खेती फल व फूलों का ही मुख्य उत्पादन होता है। यह खेती आधुनिक और पारंपरिक दोनों पद्धति द्वारा की जाती है। इसमें खेती का आकार छोटा होता है। प्रत्येक पौधे का व्यवस्थित पद्धति से ध्यान रखा जाता है।

आकृति ९.९ : फूलों की खेती

वर्तमान समय में अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए जलसिंचाई की सुविधा, रासायनिक खादों का उपयोग, हरितगृहों आदि का समावेश इस कृषि में होता हुआ दिखाई देता है। (देखो- आकृति ९.९) पुष्प कृषि में प्रमुख उत्पादन लिली, जरबेरा, ट्यूलिप, डेलिया, सेवंती, गेंदा, रजनीगंधा आदि फूल हैं। इन्हें बाजार में अच्छे दाम मिलते हैं।

फल कृषि में आम, सीताफल, अंगूर, केले, अनार, ड्रैगन फ्रूट, चेरी, संतरा, रासबेरी, स्ट्रॉबेरी, मलबेरी आदि देशी-विदेशी फलों का उत्पादन किया जाता है। (देखो- आकृति ९.१०) इन फलों का उत्पादन महाबलेश्वर, पांचगणी, पुणे, नागपुर, जलगाँव, नाशिक आदि स्थानों में होता है। भूमध्यसागरीय जलवायु के प्रदेश, फ्रांस एवं इटली फल एवं फूलों की कृषि के लिए प्रसिद्ध हैं ।

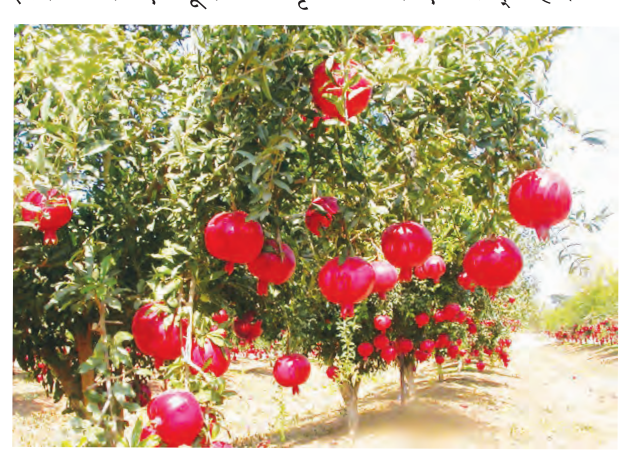

आकृति ९.१०: फल बागानों की कृषि

क्या तुम जानते हो ?

जैविक कृषि :

फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्त्व मृदा से प्राप्त हो जाते हैं। इसलिए प्रयुक्त पोषक द्रव्यों का मृदा में पुनर्भरण होना आवश्यक होता है। उत्पादन वृद्‌धि के उद्‌देश्य को साध्य करते समय पोषक द्रव्यों का उपयोग भी बड़े पैमाने पर होता है। उसके लिए जैविक खाद तैयार की जाती है ।

- खरपात को भूमि में सड़ाना ।
- पटसन तथा धैंचा जैसी हरियाली की फसलें जमीन में दबाकर खाद तैयार की जाती हैं ।
- गोबर खाद एवं कंपोस्ट खाद का उपयोग किया जाता है ।
- गीले कचरे से केंचुआ खाद की निर्मिति की जाती है ।

सभी प्रकार के वनस्पतिजन्य पदार्थ मिट्‌टी में मिलाकर और सड़ाकर जब फसलें उगाई जाती हैं; उसे 'जैविक कृषि पद्‌धति' कहा जाता है।

कीटकों की रोकथाम के लिए वनस्पतिजन्य जैविक रोगनाशक जैसे कड़ुआ नीम व कीटनाशकों का उपयोग कर आवश्यकता पूर्ण की जाती है। जैविक खेती द्‌वारा उत्पादित फसलें उच्च श्रेणी की होती हैं। सभी प्रकार के रासायनिक खादों और कीटनाशकों का उपयोग इस खेती में करना वर्जित होता है।

आकृति ९.११ : जैविक खाद निर्मिति

बताओ तो

नीचे दी गई आकृति ९.१२ के चित्रों का निरीक्षण करो और उसके नीचे खेती के प्रकार लिखकर उनको संक्षेप में जानकारी लिखो ।

आकृति ९.१२ :

कृषि पर्यटन :

कृषि व्यवसाय का एक नया क्षेत्र कृषि पर्यटन है। उष्ण कटिबंधीय देशों में अनेक प्रकार की कृषि उपजें होती हैं। इससे वहाँ कृषि पर्यटन के लिए बड़े अवसर हैं। कृषि प्रधान देशों में ग्रामीण भागों की संस्कृति, रीति-रिवाज और जीवन का उपयोग कृषि पर्यटन के लिए किया जाता है। (देखो- आकृति ९.१३)

किसान, उसकी खेती-बाडी, घर, भोजन, परिसर इन सब के प्रति शहरी लोगों में जिज्ञासा और कौतूहल होता है। अतः अनेक लोग कृषि पर्यटन हेतु गाँवों में जाते हैं। इससे किसान एवं उस गाँव के लोगों को आर्थिक लाभ मिलता है।

आकृति ९.१२: कृषि पर्यटन

थोड़ा विचार करो

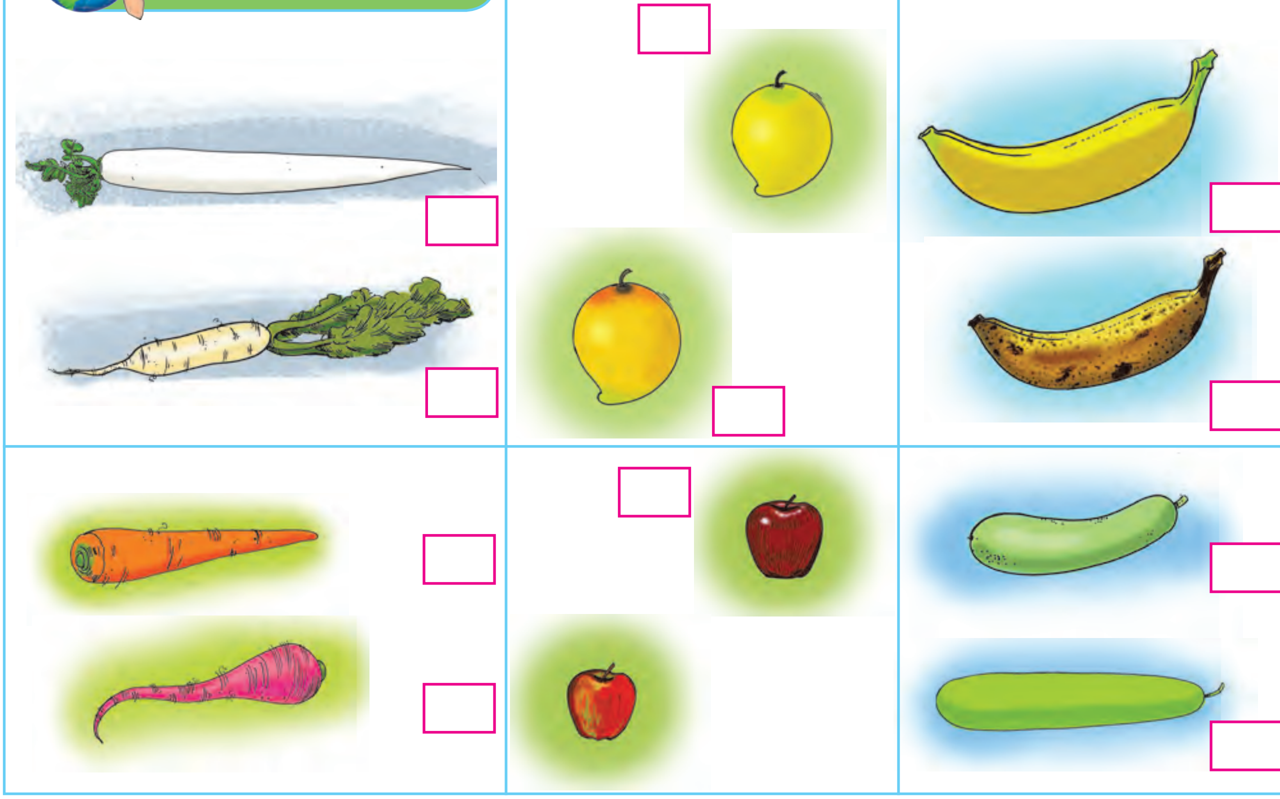

आकृति ९.१४ : उचित विकल्प चुनो।

आकृति ९.१४ में कुछ फल और सब्जियों की जोड़ियाँ दिखाई गई हैं। प्रत्येक जोड़ी में से एक फल अथवा सब्जी अपनी पसंद के अनुसार चुनो। उनके पास की चौखट में "✓" ऐसा चिह्न लगाओ। तुम्हारे द्वारा चुने गए फल-सब्जियों पर चर्चा करो।

(शिक्षकों के लिए सूचना:- इस चर्चा के बाद विद्यार्थियों को प्राकृतिक एवं कृत्रिम पद्धति द्वारा उगाई गई फसलों के उत्पादन की जानकारी दो।)

भौगोलिक स्पष्टीकरण

चर्चा के बाद तुम्हारे ध्यान में यह आया होगा कि दीखने में ताजे, रसीले और हरे-भरे फल और सब्जियाँ

हमेशा उचित पद्‌धति से तैयार किए जाते हैं, ऐसा नहीं है। फल और सब्जियों से जल्द-से-जल्द अधिक उत्पादन पाने के लिए उनपर कृत्रिम रासायनिक एवं दवाइयों का भरपूर छिड़काव किया जाता है। इससे फल-सब्जियाँ तो शीघ्र पक जाती हैं; साथ ही ताजा और आकर्षक भी दीखती हैं परंतु ऐसी फल-सब्जियाँ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं। बाजार से खरीदकर लाए गए ऐसे उत्पादन कम समय तक टिकते हैं।

देखो भला, क्या हो पाता है

निम्न मुद्दों के आधार पर एक टिप्पणी तैयार करो।

- मानव की लालची प्रवृत्ति के कारण कृषि व्यवसाय में कौन-सी अयोग्य पद्‌धतियाँ पाई जाती हैं?
- तुम्हारे परिसर में कृषि के लिए जल सिंचाई की कौन-सी सुविधाएँ उपलब्ध हैं?
- कृषि के लिए क्या पानी का अपव्यय/दुरुपयोग होते दिखाई देता है? कैसे?
- कृषि में प्रचलित अयोग्य पद्‌धति से बचने के लिए सरलता से कौन-से उपाय किए जा सकते हैं?

विपणन प्रबंधन :

किसानों द्‌वारा उत्पादित वस्तुओं को उचित दामों और उचित समय में ग्राहकों तक पहुँचने का मुख्य दायित्व विपणन प्रबंधन पर होता है। भारत जैसे देश में इस प्रबंधन का महत्त्व निम्न मुद्दों के आधार पर स्पष्ट होता है।

- भारतीय कृषि विस्तृत प्रदेश में बिखरी हुई है।
- सभी किसान संगठित नहीं हैं।
- अनेक किसान आर्थिक दृष्टि से दुर्बल होने के कारण कृषि उत्पादन का वितरण वे स्वयं नहीं कर सकते। इसलिए किसानों की उपज को ग्राहकों तक पहुँचाने के लिए तहसील स्तर पर कृषि उपज मंडी की स्थापना की गई है। किसान अपना माल लाता है और व्यापारियों को बेचता है।
- कृषि वस्तुएँ नाशवान होती हैं। अतः उसकी व्यवस्था उचित समय पर करनी पड़ती है। इसके लिए किसानों के संगठन रहना, उपभोक्ता बाजार, सहकारी संस्थाएँ जैसे घटक अत्यंत उपयुक्त होते हैं। इससे आढ़तिये, बिचौलिये आदि द्‌वारा किसानों के लिए किए जाने वाले शोषण को रोका जा सकता है।

खेती की कुछ उपज बड़े उद्‌योगों के लिए कच्चे माल के रूप में उपयोग में लाई जाती है। वैश्वीकरण की वजह से कृषि उपज को अंतरराष्ट्रीय बाजार सरलता से उपलब्ध होने लगा है। अनेक प्रगतिशील किसान अपने खेतों में अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग करते हैं; साथ ही खेत में उगने वाली फसल को योग्य प्रकार से पैक करके (packaging)बेचते हैं । हॉटेल, मॉल आदि के लिए भी बड़े पैमाने पर कृषि माल की आवश्यकता होती है । इंटरनेट की सहायता से विज्ञापन द्‌वारा देश के भीतर तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर माल बेचा जाता है।

क्या तुम जानते हो ?

आकृति ९.१५ : इजराइल में कृषि का प्रकार

इजराइल विभिन्न कृषि उत्पादनों का प्रमुख निर्यातक देश तथा कृषि तकनीकी में विश्व का उन्नत देश है। वहाँ की प्रतिकूल जलवायु, आधे से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ मरुस्थल, जल का अभाव जैसी विपरीत परिस्थितियों पर मात कर इजराइल ने खेती को प्राथमिकता देकर कृषि क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ छू ली हैं।

थोड़ा सोचो

☞ कृषि के लिए भूजल किन-किन विधियों से प्राप्त किया जाता है ?

मैं और कहाँ हूँ ?

☞ चौथी कक्षा- भाग १- परिसर अध्ययन- पाठ २- अमूल्य भोजन ।

☞ पाँचवीं कक्षा- परिसर अध्ययन- पाठ १२- सबके लिए भोजन ।

स्वाध्याय

प्रश्न १. निम्न कथनों के लिए उचित विकल्प चुनो :

(१) फसलों की अदला-बदली इस कृषि प्रकार में की जाती है।

(अ) गहन कृषि (इ) व्यापारिक कृषि

(आ) बागानी कृषि (ई) फलोद्‌यान कृषि

(२) कृषि के लिए निम्न में से उचित विकल्प दो ।

(अ) केवल जोताई करना।

(आ) प्राणियों, औजारों, यंत्रों और मनुष्य बल का उपयोग करना।

(इ) केवल मनुष्य बल का उपयोग करना।

(ई) केवल उपज लेना।

(३) भारत में कृषि का विकास हुआ है क्योंकि.....

(अ) भारत में कृषि के दो मौसम होते हैं।

(आ) अधिकांश लोग कृषि पर निर्भर हैं।

(इ) भारत में पारंपरिक कृषि की जाती है।

(ई) भारत में जलवायु, मृदा, जल आदि अनुकूल घटकों की उपलब्धता है।

(४) भारत में कृषि के अंतर्गत आधुनिक पद्‌धति और तकनीकी का उपयोग करना आवश्यक है, क्योंकि

(अ) उन्नत बीजों के कारखाने हैं ।

(आ) रासायनिक खाद निर्मिति के उद्‌योग हैं।

(इ) जनसंख्या में वृद्‌धि और उद्‌योग कृषि पर आधारित हैं।

(ई) आधुनिक साधन एवं यंत्र उपलब्ध हैं।

प्रश्न २. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो :

(१) कृषि के लिए जलसिंचाई का महत्त्व स्पष्ट करो ।

(२) जल सिंचाई के लिए उपयोग में लाई जाने वाली किन्हीं दो पद्‌धतियों की तुलनात्मक जानकारी लिखो।

(३) कृषि के प्रमुख प्रकार बताओ और गहन कृषि एवं विस्तृत कृषि की जानकारी लिखो।

(४) बागानी कृषि की विशेषताएँ लिखो।

(५) तुम्हारे आसपास के क्षेत्र में कौन-कौन-सी फसलें होती हैं? उनके भौगोलिक कारण कौन-से हैं ?

(६) भारत में कृषि का स्वरूप मौसमी क्यों है? बारहोंमासी कृषि करने में कौन-कौन-सी समस्याएँ हैं ?

उपक्रम :

(१) अपने परिसर में आधुनिक तकनीकी विज्ञान का उपयोग कर की जाने वाली खेती पर जाओ और जानकारी प्राप्त करो।

ICT का उपयोग :

(१) उन्नत बीजों एवं जलसिंचाई के साधनों के चित्र इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त करो।

(२) इंटरनेट का उपयोग करके इजराइल देश की कृषि की जानकारी प्राप्त करो और उसे प्रस्तुत करो ।

***

IXDV6K